ऋषियों की कहानी

एक नगरी में एक ब्राह्मण–ब्राह्मणी खेती करते व सुखपूर्वक रहते। एक दिन ब्राह्मणी को ऋषि पंचमी का उद्यापन करने की इच्छा हुई और उसने ऋषियों को जीमने बुलाया। संयोगवश रसोई बनाने से पहले ही वह रजस्वला हो गई । उसने किसी को बताया नहीं और सात बार स्नान करके चावल, नमकीन व मीठे रसोई बना ली । सातों ऋषि जीमने आ गये । उनको भोजन परोसा ऋषियों के सत् के प्रभाव से वो अशुद्ध भोजन लटो में बदल गया । ऋषियों को क्रोध आया और उन्होंने ब्राह्मण–ब्राह्मणी को श्राप दिया । श्राप वश अगले जन्म में दोनों अपने बेटे के घर में कुतिया व बैल की योनि में पैदा हुये । ब्राह्मण का बेटा बहुत धार्मिक था । जैसे ही पिता का श्राद्ध आया, बेटे ने ब्राह्मण नूत दिया। बहू ने भोजन में खीर बनाई । खीर का भगोना खुला पड़ा था उसमें सांप गिर गया । ये कुतिया ने देख लिया और मन में सोचने लगी कि जो भी इस खीर को खायेगा मर जायेगा व मेरे बेटे बहू को पाप लगेगा। उसने खीर में मुंह डाल दिया । बहू ने ये देखा और उसे गुस्सा आया। उसने चूल्हे से लकड़ी निकाली और कुतिया की कमर पर दे मारी। फिर से धो माजकर रसोई बनाई ब्राह्मण को जिमाया। पर कुत्ती को कुछ नहीं दिया। रात हुई कुतिया बैल के पास आ पूरी बात सुनाने लगी। तो बैल बोला पिछले जन्म में तूने रजस्वला हुई भोजन बनाया। इसी पाप से तुझे कुतिया का जन्म मिला व तेरे पाप वश मैं भी बैल बना। आज मुझे भी मेरे बेटे ने दिन भर खेत में जुताया और कुछ खिलाया नहीं, आज का श्राद्ध उनका बेकार गया। ये सब बातें उसके बेटे ने सुन ली। उठकर बैल को चारा दिया, कुतिया को भोजन खिलाया व पानी पिलाया। मन में बहुत पछताने लगा ।

दिन उगते ही वो जंगल में गया। उसे ऋषि मिले तो उनके पैर पड़ सब बात बताई और पूछा मेरे माँ–बाप की मुक्ति का उपाय बताइये। ऋषि बोले तू ऋषि पंचमी का व्रत कर । बेटे ने पूछा कि इसकी विधि क्या है ? ऋषि बोले ''भादवा में चांदने पखवाड़े की पंचमी को व्रत करके सप्तऋषियों की पूजा करना, कहानी कहना व माँ–बाप को पुण्य देना। ऐसा सात वर्ष करें ।'' बेटे बहू ने ये व्रत किया, माँ–बाप को इसका पुण्य दिया। सात व्रत पूरे होते ही आकाश से विमान आया, बैल सुन्दर पुरुष व कुतिया भी सुन्दर स्त्री के रूप में आ गई। दोनों विमान में बैठकर स्वर्ग गये । हे ऋषि भगवान ! जैसे ब्राह्मणी के दोष दूर किये वैसे सब के करना । उनको मोक्ष दिया वैसा सबको देना। खोटी की खरी, अधूरी की पूरी ।